INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 16 | ISSUE - 7 | AUGUST – 2026

आधुनिकता एवं बदलती पारिवारिक व्यवस्था का वृद्धों के सामाजिक जीवन पर प्रभाव : प्रयागराज जनपद के विशेष संदर्भ में

कु. नीतू साकेत
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग,
ज्ञानचंद श्रीवास्तव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दमोह (म.प्र.)

डॉ. के.पी. अहिरवार
प्राचार्य, ज्ञानचन्द श्रीवास्तव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दमोह (म.प्र.)

सारांश –

आधुनिकता सामाजिक परिवर्तन की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जिसने भारतीय समाज की पारिवारिक संरचना, सामाजिक संबंधों, जीवन–शैली, मूल्यों तथा भूमिकाओं को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा का प्रसार, रोजगार के बदलते अवसर, तकनीकी विकास, व्यक्तिवाद तथा बढ़ती गतिशीलता के कारण पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। संयुक्त परिवारों की अपेक्षा एकल परिवारों की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई है तथा परिवार के सदस्यों के बीच भौगोलिक दूरी भी बढ़ी है। इन परिवर्तनों का प्रभाव परिवार के सभी सदस्यों पर पड़ता है, किंतु वृद्ध व्यक्तियों की सामाजिक स्थिति पर इसका प्रभाव विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। पारंपरिक भारतीय समाज में वृद्धों को परिवार के मार्गदर्शक एवं निर्णयकारी सदस्य के रूप में सम्मान प्राप्त था। संयुक्त परिवार में वृद्धों को भावनात्मक सुरक्षा, आर्थिक सहयोग, दैनिक देखभाल तथा सामाजिक पहचान प्राप्त होती थी। आधुनिक पारिवारिक व्यवस्था में वृद्धों की भूमिका में परिवर्तन हुआ है। कई वृद्ध अपने बच्चों से अलग रहते हैं या परिवार के भीतर रहते हुए भी निर्णय प्रक्रिया में उनकी भूमिका सीमित हो जाती है। बच्चों का शिक्षा एवं रोजगार के लिए दूसरे शहरों में प्रवास, आर्थिक निर्भरता, स्वास्थ्य समस्याएँ तथा डिजिटल विभाजन वृद्धों के सामाजिक जीवन को प्रभावित कर रहे हैं।

मुख्य शब्द – आधुनिकता, वृद्धावस्था, संयुक्त परिवार, एकल परिवार, सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक जीवन, एकाकीपन, सामाजिक अलगाव एवं प्रयागराज।

प्रस्तावना –

मानव समाज निरंतर परिवर्तनशील है। सामाजिक परिवर्तन समाज की संरचना, सामाजिक संस्थाओं, संबंधों, मूल्यों, मान्यताओं तथा जीवन–शैली को प्रभावित करने वाली व्यापक प्रक्रिया है। आधुनिकता इसी सामाजिक परिवर्तन की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत पारंपरिक सामाजिक व्यवस्थाओं, संस्थाओं और जीवन–मूल्यों में परिवर्तन के साथ नए सामाजिक प्रतिमानों का विकास होता है। आधुनिकता को केवल तकनीकी अथवा भौतिक विकास के रूप में नहीं देखा जा सकता, बल्कि यह सामाजिक चेतना, तर्कशीलता, व्यक्तिवाद, शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता, व्यावसायिक गतिशीलता तथा जीवन–शैली में होने वाले व्यापक परिवर्तन से संबंधित है।

भारतीय समाज में आधुनिकता का प्रभाव विशेष रूप से परिवार जैसी महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था पर दिखाई देता है। ''औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा के प्रसार, रोजगार के नए अवसरों, तकनीकी विकास, वैश्वीकरण तथा संचार माध्यमों के विस्तार ने पारंपरिक सामाजिक संबंधों एवं पारिवारिक संरचनाओं को प्रभावित किया है। भारतीय समाज में परिवार सदैव सामाजिक संगठन की मूल इकाई रहा है। परिवार व्यक्ति को केवल जैविक एवं भावनात्मक संबंध ही प्रदान नहीं करता, बल्कि सामाजिक सुरक्षा, आर्थिक सहयोग, संस्कार, समाजीकरण, सांस्कृतिक हस्तांतरण तथा सामाजिक पहचान प्रदान करने का भी कार्य करता है।''[1] अतः परिवार की संरचना और कार्यों में होने वाला परिवर्तन उसके प्रत्येक सदस्य के सामाजिक जीवन को प्रभावित करता है। पारंपरिक भारतीय समाज में संयुक्त परिवार व्यवस्था का विशेष महत्व रहा है। संयुक्त परिवार में एक ही परिवार के अंतर्गत अनेक पीढ़ियाँ एक साथ रहती थीं। इस व्यवस्था में परिवार के वृद्ध सदस्यों को विशेष सम्मान एवं सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होती थी। ''वृद्ध व्यक्ति अपने जीवन–अनुभव, सामाजिक ज्ञान एवं पारिवारिक परंपराओं के आधार पर परिवार के मार्गदर्शक की भूमिका निभाते थे। विवाह, संपत्ति, पारिवारिक विवाद, सामाजिक संबंध तथा अन्य महत्वपूर्ण निर्णयों में उनकी सलाह को महत्व दिया जाता था।''[2] इस प्रकार वृद्ध व्यक्ति परिवार में केवल आयु की दृष्टि से वरिष्ठ सदस्य नहीं थे, बल्कि वे पारिवारिक नेतृत्व, सामाजिक नियंत्रण तथा सांस्कृतिक हस्तांतरण के महत्वपूर्ण माध्यम भी थे।

वृद्धों की भूमिका बच्चों एवं युवाओं के समाजीकरण में भी महत्वपूर्ण रही है। ''वे नई पीढ़ी को पारिवारिक परंपराओं, लोकाचार, सांस्कृतिक मूल्यों, नैतिक मान्यताओं तथा सामाजिक व्यवहार का ज्ञान प्रदान करते थे।''[3] इस प्रकार पारंपरिक परिवार में वृद्ध और युवा पीढ़ी के बीच अंतःपीढ़ीय संबंध अपेक्षाकृत सुदृढ़ दिखाई देते थे। वृद्धावस्था को केवल शारीरिक निर्भरता अथवा उत्पादकता में कमी की अवस्था के रूप में न देखकर अनुभव, ज्ञान, विवेक और सामाजिक मार्गदर्शन की अवस्था के रूप में स्वीकार किया जाता था।

आधुनिकता के विस्तार के साथ भारतीय परिवार की संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। शिक्षा तथा रोजगार के विस्तार ने युवा वर्ग की सामाजिक एवं भौगोलिक गतिशीलता को बढ़ाया है। रोजगार की तलाश में युवा महानगरों, औद्योगिक केंद्रों तथा अन्य राज्यों की ओर प्रवास करने लगे हैं। इसके परिणामस्वरूप परिवार के सदस्यों के बीच भौतिक दूरी बढ़ी है। दूसरी ओर, नगरीय क्षेत्रों में आवास की सीमाएँ, बढ़ती जीवन–यापन लागत, व्यावसायिक व्यस्तता तथा छोटे परिवार की प्राथमिकता ने एकल परिवारों के विस्तार को प्रभावित किया है।

एकल परिवार का विस्तार अपने आप में पूर्णतः नकारात्मक सामाजिक परिवर्तन नहीं है। आधुनिक परिवार व्यक्ति को अधिक व्यक्तिगत स्वतंत्रता, निर्णय लेने की स्वायत्तता तथा व्यावसायिक एवं शैक्षिक अवसर प्रदान कर सकता है। किंतु वृद्धों के संदर्भ में इसके कुछ विशेष सामाजिक परिणाम दिखाई दे सकते हैं। संयुक्त परिवार में उपलब्ध दैनिक देखभाल, भावनात्मक सहयोग तथा अंतःपीढ़ीय संपर्क की व्यवस्था कमजोर होने पर वृद्ध व्यक्ति अपने बच्चों से अलग रहने की स्थिति में पहुँच सकते हैं। कुछ परिस्थितियों में वे बच्चों के साथ रहते हुए भी परिवार की निर्णय प्रक्रिया, सामाजिक गतिविधियों तथा दैनिक पारिवारिक जीवन में स्वयं को अपेक्षाकृत कम प्रभावशाली अनुभव कर सकते हैं।

आधुनिक परिवार में व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा निजी जीवन को विशेष महत्व प्राप्त हुआ है। पति–पत्नी और उनके बच्चों पर केंद्रित परिवार में आर्थिक एवं सामाजिक निर्णयों की प्रकृति भी बदल गई है। युवा पीढ़ी शिक्षा, रोजगार, तकनीकी ज्ञान तथा आर्थिक स्वतंत्रता के कारण अपने जीवन से संबंधित अनेक निर्णय स्वयं लेने लगी है। इससे पारिवारिक सत्ता एवं निर्णय प्रक्रिया में वृद्धों की पारंपरिक भूमिका में परिवर्तन आया है। हालांकि यह परिवर्तन प्रत्येक परिवार में समान रूप से दिखाई नहीं देता। जिन परिवारों में वृद्धों के अनुभव एवं ज्ञान को सम्मान दिया जाता है और उन्हें निर्णय प्रक्रिया में सहभागी बनाया जाता है, वहाँ आधुनिकता के बावजूद अंतःपीढ़ीय संबंध सकारात्मक एवं सहयोगात्मक बने रह सकते हैं।

आधुनिकता ने संचार एवं तकनीकी साधनों के माध्यम से परिवार के सदस्यों के बीच संपर्क बनाए रखने की नई संभावनाएँ भी उत्पन्न की हैं। मोबाइल फोन, इंटरनेट, वीडियो कॉल तथा सोशल मीडिया जैसे माध्यमों के कारण भौतिक दूरी के बावजूद संपर्क बनाए रखना संभव हुआ है। किंतु तकनीकी संपर्क प्रत्यक्ष सामाजिक एवं भावनात्मक सहभागिता का पूर्ण विकल्प नहीं बन सकता। वृद्ध व्यक्तियों की तकनीकी दक्षता, डिजिटल साक्षरता तथा नई तकनीकों के प्रति अनुकूलन की क्षमता अलग–अलग होती है। इसलिए आधुनिक तकनीकी

साधनों की उपलब्धता के बावजूद कुछ वृद्ध व्यक्तियों में सामाजिक अलगाव अथवा भावनात्मक दूरी की स्थिति बनी रह सकती है।

वृद्धों के सामाजिक जीवन पर पारिवारिक परिवर्तन का प्रभाव केवल परिवार तक सीमित नहीं रहता। परिवार सामाजिक सुरक्षा की प्राथमिक इकाई होने के कारण उसमें होने वाले परिवर्तन वृद्धों की सामाजिक सहभागिता, सामाजिक प्रतिष्ठा, निर्णय लेने की क्षमता, अंतःपीढ़ीय संबंध, भावनात्मक संतुष्टि तथा सामाजिक समर्थन को प्रभावित कर सकते हैं। ''यदि वृद्ध व्यक्ति परिवार के साथ सक्रिय रूप से जुड़े रहते हैं, सामाजिक गतिविधियों में भाग लेते हैं और उनकी राय को सम्मान दिया जाता है, तो आधुनिक पारिवारिक व्यवस्था में भी उनका सामाजिक जीवन संतोषजनक हो सकता है।''[4] इसके विपरीत, उपेक्षा, अकेलापन, निर्णय प्रक्रिया से बहिष्करण तथा सामाजिक संपर्क में कमी उनके सामाजिक जीवन को प्रभावित कर सकती है।

इस संदर्भ में वृद्धावस्था को केवल जनसांख्यिकीय अथवा जैविक अवस्था के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। वृद्धावस्था सामाजिक संबंधों, पारिवारिक संरचना, आर्थिक स्थिति, सामाजिक प्रतिष्ठा, भावनात्मक सुरक्षा तथा सामुदायिक सहभागिता से भी गहराई से जुड़ी हुई है। भारत में वृद्ध जनसंख्या के बढ़ते महत्व के साथ यह आवश्यक हो जाता है कि बदलती पारिवारिक व्यवस्था के संदर्भ में वृद्धों की सामाजिक स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया जाए। विशेष रूप से यह जानना आवश्यक है कि संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर होने वाले परिवर्तन ने वृद्धों की पारिवारिक भूमिका, सामाजिक सहभागिता, निर्णय लेने की क्षमता, अंतःपीढ़ीय संबंधों तथा सामाजिक सुरक्षा को किस प्रकार प्रभावित किया है।

इसी व्यापक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत अध्ययन "आधुनिकता एवं बदलती पारिवारिक व्यवस्था का वृद्धों के सामाजिक जीवन पर प्रभाव : प्रयागराज जनपद के विशेष संदर्भ में" महत्वपूर्ण हो जाता है। प्रयागराज जनपद में ग्रामीण एवं नगरीय दोनों प्रकार की सामाजिक संरचनाएँ विद्यमान हैं। यहाँ पारंपरिक पारिवारिक मूल्यों और आधुनिक जीवन–शैली के सह–अस्तित्व को देखा जा सकता है। अतः प्रयागराज जनपद के विशेष संदर्भ में वृद्धों के सामाजिक जीवन का अध्ययन आधुनिकता, पारिवारिक परिवर्तन तथा अंतःपीढ़ीय संबंधों के बीच विकसित हो रहे सामाजिक संबंधों को समझने में उपयोगी होगा। यह अध्ययन इस बात को स्पष्ट करने का प्रयास करेगा कि बदलती पारिवारिक संरचना ने वृद्धों की सामाजिक भूमिका, पारिवारिक सहभागिता, सामाजिक सम्मान, भावनात्मक संबंध, निर्णय प्रक्रिया, सामाजिक सुरक्षा तथा सामाजिक अलगाव को किस सीमा तक प्रभावित किया है। साथ ही यह भी समझने का प्रयास किया गया है कि आधुनिकता के सकारात्मक पक्षों को स्वीकार करते हुए वृद्धों के सम्मान, सहभागिता और सामाजिक सुरक्षा को किस प्रकार सुदृढ़ किया जा सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य –

1. प्रयागराज जनपद में वृद्ध व्यक्तियों की वर्तमान सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. आधुनिकता के कारण वृद्धों के सामाजिक जीवन में होने वाले परिवर्तनों का समाजशास्त्रीय अध्ययन करना।
3. बदलती पारिवारिक व्यवस्था, विशेषकर संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर परिवर्तन का वृद्धों के जीवन पर प्रभाव ज्ञात करना।
4. बच्चों के शिक्षा एवं रोजगार के लिए प्रवासन का वृद्धों के पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों पर प्रभाव का अध्ययन करना।
5. वृद्धों में एकाकीपन एवं सामाजिक अलगाव की स्थिति तथा उसके प्रमुख कारणों का अध्ययन करना।
6. वृद्धों की सामाजिक सहभागिता एवं पारिवारिक निर्णयों में उनकी भूमिका का अध्ययन करना।

विश्लेषण –

आधुनिकता का वृद्धों के सामाजिक जीवन पर दोहरा प्रभाव देखा जा सकता है। एक ओर आधुनिकता ने वृद्धों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं, संचार तकनीक, मनोरंजन, परिवहन एवं सामाजिक सुरक्षा के नए अवसर उपलब्ध कराए हैं। दूसरी ओर पारंपरिक सामाजिक संबंधों में कमी, परिवार से दूरी एवं सामाजिक भूमिकाओं में परिवर्तन जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं ने वृद्धों के स्वास्थ्य एवं जीवन प्रत्याशा को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पहले जिन स्वास्थ्य समस्याओं के कारण वृद्धों की सामाजिक

गतिविधियाँ अत्यधिक सीमित हो जाती थीं, उनका उपचार अब अधिक प्रभावी ढंग से संभव है। नियमित स्वास्थ्य परीक्षण एवं चिकित्सा सेवाओं की उपलब्धता वृद्धों को अधिक सक्रिय जीवन जीने में सहायता कर सकती है।

संचार तकनीक ने भी वृद्धों के सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन किया है। मोबाइल फोन, वीडियो कॉल एवं इंटरनेट के माध्यम से वृद्ध दूर रहने वाले बच्चों, रिश्तेदारों एवं मित्रों से संपर्क बनाए रख सकते हैं। इससे भौगोलिक दूरी के बावजूद पारिवारिक संवाद संभव हुआ है। सभी वृद्ध डिजिटल तकनीक का समान रूप से उपयोग नहीं कर पाते। डिजिटल साक्षरता का अभाव कई वृद्धों को आधुनिक संचार व्यवस्था से दूर कर देता है। इसलिए डिजिटल तकनीक का वास्तविक लाभ प्राप्त करने के लिए वृद्धों को प्रशिक्षण देना आवश्यक है।

बदलती पारिवारिक व्यवस्था और वृद्धों की सामाजिक स्थिति –

बदलती पारिवारिक व्यवस्था का वृद्धों की सामाजिक स्थिति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। संयुक्त परिवार में वृद्धों को परिवार की दैनिक गतिविधियों में स्वाभाविक रूप से शामिल किया जाता था। एकल परिवार में परिवार के सदस्यों की संख्या कम होने के कारण वृद्धों की देखभाल के लिए उपलब्ध मानव संसाधन भी सीमित हो सकते हैं। यदि बच्चे रोजगार के कारण बाहर रहते हैं तो वृद्धों की दैनिक देखभाल और सामाजिक सहभागिता की समस्या अधिक गंभीर हो सकती है। वृद्धों की सामाजिक स्थिति का एक महत्वपूर्ण पहलू पारिवारिक सम्मान है। परिवार में वृद्धों की बात सुनी जाए, उनके अनुभवों का सम्मान किया जाए और उन्हें निर्णय प्रक्रिया में शामिल किया जाए तो वे स्वयं को परिवार का महत्वपूर्ण सदस्य अनुभव करते हैं। इसके विपरीत उपेक्षा एवं संवाद की कमी उन्हें सामाजिक रूप से अलग–थलग कर सकती है। बदलती पारिवारिक व्यवस्था ने वृद्धों की देखभाल की पारंपरिक प्रणाली को भी प्रभावित किया है। पहले परिवार के सदस्य वृद्धों की दैनिक आवश्यकताओं की जिम्मेदारी साझा करते थे। वर्तमान समय में परिवार छोटे होने तथा सदस्यों के अलग–अलग स्थानों पर रहने के कारण वृद्धों की देखभाल के लिए वैकल्पिक व्यवस्थाओं की आवश्यकता बढ़ रही है। वरिष्ठ नागरिक केन्द्र, सामुदायिक संस्थाएँ, स्वास्थ्य सेवाएँ एवं सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ इस संदर्भ में महत्वपूर्ण हो सकती हैं।

बच्चों का प्रवासन एवं वृद्धों का सामाजिक जीवन –

शिक्षा और रोजगार के लिए युवाओं का प्रवासन आधुनिक भारतीय समाज की महत्वपूर्ण विशेषता है। बच्चों के दूसरे शहर या राज्य में रहने के कारण वृद्ध माता–पिता अपने बच्चों से भौतिक रूप से दूर हो सकते हैं। आर्थिक रूप से सक्षम बच्चे अपने माता–पिता की आर्थिक सहायता कर सकते हैं, लेकिन दैनिक जीवन में साथ न होने के कारण भावनात्मक एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति में कमी हो सकती है। वृद्धों के लिए बच्चों के साथ समय बिताना केवल भावनात्मक आवश्यकता नहीं बल्कि सामाजिक सुरक्षा का भी आधार है। बीमारी या किसी आपात स्थिति में परिवार का तत्काल सहयोग महत्वपूर्ण होता है। इसलिए बच्चों का प्रवासन वृद्धों की सामाजिक सुरक्षा एवं पारिवारिक सहभागिता दोनों को प्रभावित कर सकता है। हालांकि डिजिटल तकनीक के माध्यम से प्रवासी बच्चे नियमित संपर्क बनाए रख सकते हैं। वीडियो कॉल एवं मोबाइल संचार से परिवार के सदस्यों के बीच संवाद संभव हुआ है। फिर भी प्रत्यक्ष सामाजिक संपर्क का महत्व बना रहता है। इसलिए प्रवासन की स्थिति में नियमित व्यक्तिगत मुलाकात, स्वास्थ्य देखभाल एवं भावनात्मक संवाद आवश्यक हैं।

वृद्ध महिलाओं पर आधुनिकता एवं पारिवारिक परिवर्तन का प्रभाव –

आधुनिकता ने महिलाओं की शिक्षा एवं आर्थिक सहभागिता के अवसर बढ़ाए हैं, लेकिन वृद्ध महिलाओं की सामाजिक स्थिति कई बार पारिवारिक एवं आर्थिक निर्भरता से प्रभावित होती है। जीवनसाथी की मृत्यु के बाद वृद्ध महिलाओं को आर्थिक सुरक्षा, स्वास्थ्य देखभाल तथा पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता से जुड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। वृद्ध विधवा महिलाओं के संदर्भ में सामाजिक सुरक्षा अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। यदि महिला आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं है तो उसे परिवार पर निर्भर रहना पड़ सकता है। ऐसी स्थिति में उसका सामाजिक आत्मविश्वास प्रभावित हो सकता है। इसलिए वृद्ध महिलाओं के लिए आर्थिक सुरक्षा, सामाजिक सम्मान तथा सामुदायिक सहभागिता के अवसर उपलब्ध कराना आवश्यक है।

वृद्ध पुरुषों पर आधुनिकता का प्रभाव –

वृद्ध पुरुषों के सामाजिक जीवन पर सेवानिवृत्ति एवं पेशागत भूमिका में परिवर्तन का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। कार्यकाल के दौरान रोजगार सामाजिक पहचान, आर्थिक सुरक्षा एवं सामाजिक संपर्क प्रदान करता है। सेवानिवृत्ति के बाद इन तीनों क्षेत्रों में परिवर्तन आता है। यदि वृद्ध पुरुष को नई सामाजिक भूमिका नहीं मिलती तो वह स्वयं को सामाजिक रूप से कम उपयोगी महसूस कर सकता है। वरिष्ठ नागरिक समूह, सामाजिक संस्थाएँ, धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ तथा सामुदायिक कार्यक्रम वृद्ध पुरुषों को नई सामाजिक भूमिका प्रदान कर सकते हैं। उनके अनुभव का उपयोग युवाओं के मार्गदर्शन एवं सामुदायिक विकास में किया जा सकता है।

आर्थिक स्थिति एवं वृद्धों का सामाजिक जीवन –

आर्थिक स्थिति वृद्धों की सामाजिक स्वतंत्रता को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक है। आर्थिक रूप से स्वतंत्र वृद्ध व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने एवं सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए अधिक सक्षम हो सकता है। इसके विपरीत आर्थिक रूप से आश्रित वृद्ध परिवार के सदस्यों पर निर्भर रहता है। आधुनिक परिवार में यदि वृद्ध के पास अपनी आय या सामाजिक सुरक्षा का पर्याप्त साधन है तो वह स्वयं को अधिक स्वतंत्र महसूस कर सकता है। वृद्धावस्था पेंशन, बचत, पारिवारिक सहायता एवं सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ वृद्धों की आर्थिक स्थिति को मजबूत कर सकती हैं। आर्थिक सुरक्षा का प्रभाव केवल भौतिक आवश्यकताओं तक सीमित नहीं है। आर्थिक स्वतंत्रता वृद्धों के आत्मसम्मान एवं निर्णय लेने की क्षमता को भी मजबूत करती है। इसलिए वृद्धों की सामाजिक स्थिति में सुधार के लिए आर्थिक सुरक्षा आवश्यक है।

एकाकीपन एवं सामाजिक अलगाव –

आधुनिकता और बदलती पारिवारिक व्यवस्था के संदर्भ में वृद्धों में एकाकीपन एवं सामाजिक अलगाव महत्वपूर्ण समस्याएँ बन सकती हैं। एकाकीपन व्यक्ति की भावनात्मक अनुभूति है, जबकि सामाजिक अलगाव सामाजिक संपर्कों की वास्तविक कमी से संबंधित है। वृद्ध व्यक्ति परिवार के साथ रहते हुए भी अकेलापन महसूस कर सकता है यदि परिवार के सदस्य उसके साथ पर्याप्त समय न बिताएँ। दूसरी ओर कोई वृद्ध अकेला रहते हुए भी मित्रों, पड़ोसियों एवं सामाजिक संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़ा हो सकता है। इसलिए वृद्धों के सामाजिक जीवन का मूल्यांकन केवल उनके रहने की व्यवस्था से नहीं बल्कि सामाजिक संबंधों की गुणवत्ता एवं सामाजिक सहभागिता से किया जाना चाहिए।

आधुनिकता एवं बदलती पारिवारिक व्यवस्था के वृद्धों पर प्रभाव को संरचनात्मक–प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण से समझा जा सकता है। परिवार समाज की महत्वपूर्ण संस्था है जो अपने सदस्यों को सामाजिक सुरक्षा, भावनात्मक सहयोग एवं भूमिकाएँ प्रदान करती है। जब परिवार की संरचना बदलती है तो उसके कार्यों में भी परिवर्तन होता है। संयुक्त परिवार के स्थान पर एकल परिवारों की वृद्धि ने वृद्धों की पारंपरिक देखभाल व्यवस्था को प्रभावित किया है।

प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्ति की पहचान दैनिक सामाजिक संबंधों एवं अंतःक्रियाओं के माध्यम से निर्मित होती है। यदि परिवार वृद्धों को सम्मान एवं महत्व देता है तो उनकी सामाजिक पहचान मजबूत बनी रहती है। इसके विपरीत उपेक्षा एवं संवाद की कमी से वृद्ध स्वयं को अप्रासंगिक अनुभव कर सकते हैं।

संघर्षवादी दृष्टिकोण वृद्धों की स्थिति को आर्थिक संसाधनों एवं शक्ति के वितरण के संदर्भ में समझने में सहायता करता है। आर्थिक रूप से निर्भर वृद्धों की परिवार में निर्णय लेने की क्षमता कम हो सकती है। इस प्रकार आर्थिक निर्भरता उनकी सामाजिक शक्ति को प्रभावित कर सकती है।

प्रयागराज जनपद सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधता वाला क्षेत्र है। यहाँ ग्रामीण एवं नगरीय जीवन की विभिन्न सामाजिक संरचनाएँ दिखाई देती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक पारिवारिक संबंधों का प्रभाव दिखाई दे सकता है, लेकिन रोजगार एवं शिक्षा के कारण युवाओं के बाहर जाने से वृद्धों की सामाजिक स्थिति प्रभावित हो रही है। नगरीय क्षेत्रों में छोटे परिवार एवं व्यस्त जीवन–शैली के कारण वृद्धों के साथ प्रत्यक्ष संवाद एवं सामाजिक सहभागिता सीमित हो सकती है।

प्रयागराज में वृद्धों के अध्ययन के लिए ग्रामीण एवं नगरीय वृद्धों की तुलना महत्वपूर्ण है। साथ ही पुरुष एवं महिला वृद्धों, विवाहित एवं विधवा/विधुर वृद्धों, अकेले रहने वाले तथा परिवार के साथ रहने वाले वृद्धों तथा आर्थिक रूप से स्वतंत्र एवं आश्रित वृद्धों की सामाजिक स्थिति का अध्ययन आवश्यक है। इससे आधुनिकता एवं बदलती पारिवारिक व्यवस्था के वास्तविक प्रभावों को अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

वृद्धों के सामाजिक जीवन को बेहतर बनाने के लिए परिवार एवं समुदाय दोनों की भूमिका महत्वपूर्ण है। परिवार को वृद्धों के साथ नियमित संवाद बनाए रखना चाहिए और उन्हें पारिवारिक निर्णयों में शामिल करना चाहिए। वृद्धों के अनुभव एवं ज्ञान को सम्मान देने से उनका आत्मसम्मान बढ़ता है। स्थानीय स्तर पर वरिष्ठ नागरिक क्लब, सामुदायिक केन्द्र, पुस्तकालय एवं मनोरंजन गतिविधियाँ विकसित की जानी चाहिए। वृद्धों को धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों में सक्रिय भूमिका दी जानी चाहिए। इससे सामाजिक संपर्क बढ़ेंगे और एकाकीपन कम होगा।

डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम वृद्धों को आधुनिक समाज से जोड़ने में उपयोगी हो सकते हैं। परिवार के युवा सदस्य वृद्धों को मोबाइल, वीडियो कॉल एवं डिजिटल सेवाओं का उपयोग सिखा सकते हैं। स्वास्थ्य सेवाओं एवं सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की पहुँच भी वृद्धों तक सुनिश्चित की जानी चाहिए।

निष्कर्ष:

आधुनिकता एवं बदलती पारिवारिक व्यवस्था ने वृद्धों के सामाजिक जीवन को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। आधुनिकता ने वृद्धों के लिए स्वास्थ्य सुविधाओं, संचार तकनीक, सामाजिक सुरक्षा एवं जीवन की अन्य सुविधाओं के नए अवसर प्रदान किए हैं, लेकिन इसके साथ पारंपरिक पारिवारिक समर्थन एवं सामाजिक भूमिकाओं में कमी जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। संयुक्त परिवार के विघटन, एकल परिवारों की वृद्धि, बच्चों का प्रवासन, सेवानिवृत्ति, आर्थिक निर्भरता, स्वास्थ्य समस्याएँ तथा सामाजिक संवाद में कमी वृद्धों के सामाजिक जीवन को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं। इन परिस्थितियों में वृद्धों में एकाकीपन एवं सामाजिक अलगाव की संभावना बढ़ सकती है। प्रयागराज जनपद में आधुनिकता को वृद्धों के लिए समस्या के रूप में देखने के बजाय ऐसी सामाजिक व्यवस्था विकसित करने की आवश्यकता है जिसमें आधुनिक सुविधाओं के साथ पारिवारिक संवेदनशीलता एवं सामाजिक सहभागिता भी बनी रहे। वृद्ध व्यक्ति समाज की महत्वपूर्ण सामाजिक पूंजी हैं। उनके पास जीवन का व्यापक अनुभव, पारिवारिक ज्ञान, सांस्कृतिक परंपराओं की समझ तथा सामाजिक मूल्यों का भंडार होता है। इसलिए उन्हें समाज के लिए बोझ मानने के बजाय अनुभव एवं ज्ञान के महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में स्वीकार करना चाहिए। परिवार, समुदाय, सामाजिक संस्थाओं तथा शासन के समन्वित प्रयासों से वृद्धों को सम्मानपूर्ण, सुरक्षित, सक्रिय एवं आत्मनिर्भर सामाजिक जीवन प्रदान किया जा सकता है। इस प्रकार आधुनिकता और पारिवारिक परिवर्तन के सकारात्मक पक्षों को अपनाते हुए वृद्धों के लिए भावनात्मक, सामाजिक एवं आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करना एक संवेदनशील एवं समावेशी समाज की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

संदर्भ –

[1] श्रीनिवास, एम. एन. आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन. नई दिल्ली : ओरिएंट ब्लैकस्वान, 1995, पृ. 1–20.

[2] शाह, ए. एम. भारत में परिवार का गृहस्थीगत आयाम. नई दिल्ली : ओरिएंट लॉन्गमैन, 1973, पृ. 1–25.

[3] दांडेकर, कुमुदिनी. भारत में वृद्धजन. नई दिल्ली : सेज पब्लिकेशन्स, 1996, पृ. 15–32.

[4] शर्मा, सुरेंद्रनाथ. भारत में वृद्धावस्था एवं सामाजिक परिवर्तन. नई दिल्ली : कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, 2000, पृ. 72–91.